

भारत - थाईलैंड संबंध

एक दूसरे के विस्तारित पड़ोस में स्थित भारत और थाईलैंड की समुद्री सीमा अंडमान सागर में एक दूसरे से लगती है। थाईलैंड के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध इतिहास, सदियों पुराने सामाजिक एवं सांस्कृतिक संपर्कों तथा व्यापक जन दर जन संपर्कों पर आधारित हैं। बौद्ध धर्म का साझा लिंक भारी संख्या में थाई समाज के लोगों द्वारा भारत में बौद्ध धर्म से जुड़े स्थानों की नियमित तीर्थ यात्रा में प्रदर्शित होता है। थाई वास्तुकला, कला, मूर्तिकला, नृत्य, नाटक एवं साहित्य में हिंदू घटक ढूंढे जा सकते हैं। थाई भाषा पर पाली एवं संस्कृत का प्रभाव है। थाईलैंड में रहने और काम करने वाला विशाल भारतीय समुदाय एक अन्य महत्वपूर्ण रिश्ता है।

पिछले दो दशकों में नियमित रूप से राजनीतिक आदान प्रदान, बढ़ते व्यापार एवं निवेश के चलते थाईलैंड के साथ भारत के रिश्ते अब एक व्यापक साझेदारी का रूप ले चुके हैं। भारत की पूरब में काम करो नीति को थाईलैंड की पश्चिम की ओर देखो नीति द्वारा संपूरित किया गया है, जिससे दोनों देश एक दूसरे के करीब आए हैं। दोनों देश दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया को जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रीय साझेदार हैं। वे आसियान, पूरी एशिया शिखर बैठक (ई ए एस) और बिम्स्टेक समूह में तथा मेकांग गंगा सहयोग (एम जी सी), एशिया सहयोग वार्ता (ए सी डी) तथा हिंद महासागर परिधि संघ (आई ओ आर ए) में एक दूसरे के साथ घनिष्ठता से सहयोग करते हैं। माल में व्यापार पर भारत - आसियान करार को जनवरी 2010 में लागू किया गया तथा सेवाओं एवं निवेश में भारत - आसियान एफ टी ए पर हस्ताक्षर सितंबर 2014 में किया गया तथा जुलाई 2015 में लागू हुआ।

दोनों देशों द्वारा की गई उच्च स्तरीय यात्राएं

गणमान्य व्यक्तियों द्वारा थाईलैंड की यात्रा	अवधि
प्रधानमंत्री डा. महनमोहन सिंह	जुलाई 2004, अक्टूबर 2009, 30 से 31 मई 2013
प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी	नवंबर 2002 (ट्रांजिट), अक्टूबर 2003
प्रधानमंत्री पी वी नरसिंहा राव	अप्रैल, 1993
प्रधानमंत्री राजीव गांधी	अक्टूबर, 1986
प्रधानमंत्री वी वी गिरी	1972
उप राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन	1966
गणमान्य व्यक्तियों द्वारा भारत की यात्रा	अवधि
प्रिंसेज चुलाभोर्न	फरवरी, 2013 फरवरी, 2015
प्रधानमंत्री यिंगलक शिनावाना	24-26 जनवरी 2012, 20-21 दिसंबर 2012
प्रिंसेज बजराकिटीयाभा	नवंबर, 2011 जून, 2015
प्रधानमंत्री अभिसित वेजाजिवा	अप्रैल, 2011
क्राउन प्रिंस माहा वाजिरालोंगकोर्न	दिसंबर 1998, नवंबर 2010
प्रधामंत्री सोंचई वोंगसावत	नवंबर 2008

प्रधानमंत्री सुरायुद चुलानॉट	जून 2007
प्रिंसेज महाचक्री सिरिंधोर्न	1987, 1996, 2001, 2004, मार्च 2005, नवंबर 2005, मार्च 2007, अगस्त 2007, मार्च 2008, फरवरी 2009, अगस्त 2009, मार्च 2011, अक्टूबर 2011, फरवरी 2014, जुलाई 2014
प्रधानमंत्री थाकसिन सिनावत्रा	नवंबर 2001, फरवरी 2002, जून 2005
प्रधानमंत्री जनरल चतिचाई चूनहावन	मार्च, 1989

2015 के दौरान भारत - थाईलैंड संयुक्त आयोग की 7वीं बैठक की सह अध्यक्षता करने के लिए और 27 से 29 जून 2015 तक बैंकॉक में 16वें विश्व संस्कृत सम्मेलन में भाग लेने के लिए विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने थाईलैंड का दौरा किया। विदेश मंत्री ने महामहिम राजकुमारी महा चाकरी सिरिंधोर्न तथा थाईलैंड की प्रिंसी परिषद के अध्यक्ष जनरल प्रेम तिनसुलनॉंडा से मुलाकात की। विदेश मंत्री तथा उप प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री जनरल तनाशक पतिमाप्रगोर्न ने शिष्टमंडल स्तरीय वार्ता की और प्रत्यर्पण संधि की पुष्टि के लिखतों का आदान - प्रदान किया और संशोधित दोहरा कराधान परिहार करार, नालंदा विश्वविद्यालय पर एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया तथा रंगसित विश्वविद्यालय में आयुर्वेद पर पीठ स्थापित करने के लिए एम ओ यू पर हस्ताक्षर होने के साक्षी बने। 28 और 29 मई 2015 को एशिया एवं प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग (यू एन ई एस सी ए पी) की 71वीं बैठक में भाग लेने के लिए वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती निर्मला सीतारमन ने थाईलैंड का दौरा किया। उन्होंने यू एन ई एस सी ए पी के कार्यपालक सचिव डा. शमशाद अख्तर के साथ द्विपक्षीय बैठक की। मंत्री महोदया ने थाईलैंड के उप प्रधानमंत्री एम आर प्रिदीयथोर्न देवकुला तथा थाईलैंड के वाणिज्य मंत्री जनरल चतचाई सरीकुल्या से भी मुलाकात की तथा दूतावास द्वारा आयोजित कारोबारी कार्यक्रम को संबोधित किया। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत दोभाल ने 1 और 2 अप्रैल 2015 को थाईलैंड का दौरा किया। उन्होंने प्रधानमंत्री जनरल प्रयुत चान ओ चा, उप प्रधानमंत्री एवं रक्षा मंत्री प्रवित वांगसुवांग, उप प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री जनरल तनासक पतिमप्रगोर्न से मुलाकात की तथा थाईलैंड की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के महा सचिव श्री अनुसित कुनकोर्न के साथ बैठक की।

उप प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री जनरल तनाशक पतिमप्रगोर्न ने 10-11 मार्च, 2015 को भारत का दौरा किया। उन्होंने दिल्ली वार्ता VII में भाग लिया, रक्षा मंत्री श्री मनोहर परिकर से मुलाकात की और विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ शिष्टमंडल स्तरीय बातचीत की। थाईलैंड के अतिथि शिष्टमंडल को सचिव (डी आई पी पी) ने मेक इन इंडिया पर प्रस्तुति दी। वाणिज्य सचिव चतकई सरीकाल्या ने 24 से 26 फरवरी 2015 तक भारत का दौरा किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 12 नवंबर 2014 को नाइ पी ताव में आसियान शिखर बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में प्रधानमंत्री जनरल प्रयुत चोन ओ चा के साथ आपसी हित के द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की। गृह राज्य मंत्री श्री किरन रिजीजू ने बैंकॉक में 27 और 28 नवंबर 2014 को एशिया एवं प्रशांत में सिविल पंजीकरण तथा महत्वपूर्ण सांख्यिकी पर पहले मंत्री स्तरीय सम्मेलन में भाग लिया।

महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती मेनका गांधी ने 19 से 20 नवंबर 2014 को "लैंगिक समानता एवं महिलाओं का सशक्तीकरण, वीजिंग प्लस 20 समीक्षा" पर एशियाई एवं प्रशांत सम्मेलन में भाग लेने के लिए बैंकाक का दौरा किया। इससे पूर्व गृह राज्य मंत्री किरिन रिजिजू ने 23 से 26 जून 2014 के दौरान बैंकाक में आदम जोखिम कटौती पर छठवें एशियाई मंत्री स्तरीय सम्मेलन में भाग लिया। शाही थाई सशस्त्र बल के रक्षा बल प्रमुख जनरल थनासाक पतीमाप्रकोर्न के नेतृत्व में एक थाई शिष्टमंडल ने 28 से 30 जून 2014 के दौरान भारत का आधिकारिक दौरा किया। जनरल थनासाक ने रक्षा एवं वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली से मुलाकात की तथा नई दिल्ली में थलसेना प्रमुख जनरल विक्रम सिंह के साथ बैठक की।

प्रधानमंत्रि डा. मनमोहन सिंह ने विदेश मंत्री श्री सलमान खुरशीद तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ 30 से 31 मई 2013 के दौरान प्रधानमंत्री युनलुक शिनवात्रा के निमंत्रण पर थाईलैंड का दौरा किया। उन्होंने एक विशेष उपहार के रूप में बोधगया से बोधि वृक्ष का एक पौधा महामहिम नरेश भूमिबोल अदुलयादेज को साझी सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक के रूप में भेंट किया। प्रधानमंत्री ने आपसी हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय मुद्दों पर प्रधानमंत्री इंगलुक शिनवात्रा के साथ व्यापक वार्ता की। इस यात्रा के दौरान छः करारों / एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए तथा एक विस्तृत संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया।

प्रधानमंत्री यिंगलुक शिनवात्रा ने भारत के गणतंत्र दिवस समारोह के लिए मुख्य अतिथि के रूप में 24 से 26 जनवरी 2012 के दौरान भारत का राजकीय दौरा किया। इस यात्रा के दौरान छः करारों / एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए - एफ टी ए के लिए द्विपक्षीय रूपरेखा करार को संशोधित करने के लिए दूसरा प्रोटोकॉल, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में सहयोग के कार्यक्रम, रक्षा पर एम ओ यू, सजायाफ्ता व्यक्तियों के स्थानांतरण पर करार, सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम 2012 - 14 और चुलालोंगकोर्न विश्वविद्यालय में भारतीय अध्ययन केन्द्र में एक चेयर स्थापित करने के लिए आई सी सी आर के लिए एक एम ओ यू। थाई प्रधानमंत्री ने नवंबर 2012 को नामपेन्ह में 10वीं भारत - आसियान शिखर बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में प्रधानमंत्री से मुलाकात की। प्रधानमंत्री यिंगलुक शिनवात्रा ने दिसंबर 2012 के दौरान नई दिल्ली में आसियान - भारत संस्मारक शिखर बैठक में भाग लेने के लिए भारत का पुनः दौरा किया। उन्होंने नई दिल्ली आते हुए बोधगया में महाबोधि मंदिर के भी दर्शन किए।

थाईलैंड - भारत संसदीय मैत्री समूह (टी आई पी एफ जी) का गठन 2008 में थाईलैंड की राष्ट्रीय सभा में किया गया तथा 2011 एवं पुनः 2014 में इसका पुनर्गठन किया गया। दिसंबर 2011 में भारत में एक समकक्ष समूह का गठन किया गया। टी आई पी एफ जी अध्यक्ष श्री क्रिच अतितकायू के नेतृत्व में एक थाई संसदीय शिष्टमंडल ने अगस्त 2012 में भारत का दौरा किया। लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार के नेतृत्व में एक 19 सदस्यीय शिष्टमंडल ने मार्च 2010 में अंतर संसदीय संघ की 122वीं सभा में भाग लेने के लिए बैंकाक का दौरा किया।

द्विपक्षीय संस्थानिक तंत्र

संयुक्त आयोग बैठक (जे सी एम) : भारत - थाईलैंड जे सी एम विदेश मंत्रियों के स्तर पर है। भारत की विदेश मंत्री तथा उप प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री जनरल तनासक ने 29 जून 2015 को भारत - थाईलैंड जे सी एम के 7वें सत्र की सह अध्यक्षता की। आर्थिक एवं वाणिज्यिक सहयोग, संस्कृति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, आई सी टी, शिक्षा, कृषि, कानून एवं कंसुलर मामलों में बड़े पैमाने पर चर्चा हुई। 6वें जे सी एम का आयोजन दिसंबर 2011 में नई दिल्ली में हुआ।

विदेश कार्यालय परामर्श (एफ ओ सी) : भारत - थाईलैंड एफ ओ सी का आयोजन नई दिल्ली में 8 सितंबर 2014 को हुआ। विदेश मंत्रालय में स्थायी सचिव श्री सिहासक फुवांगकेटकेऊ तथा सचिव (पूर्व) ने आपसी हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं बहुपक्षीय मुद्दों पर विचारों का आदान प्रदान किया। इससे पूर्व विदेश कार्यालय परामर्श का आयोजन 10 अगस्त 2012 को बैंकाक में हुआ था।

रक्षा वार्ता : रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रिकर ने 3 नवंबर, 2015 को क्वालालंपुर में ए डी एम एम + के दौरान अतिरिक्त समय में थाईलैंड के उप प्रधानमंत्री एवं रक्षा मंत्री से मुलाकात की। नौसेना प्रमुख एडमिरल आर के धवन ने 23 से 26 जुलाई, 2015 के दौरान थाईलैंड का आधिकारिक दौरा किया। स्टाफ समिति प्रमुख ए सी एम अरूप राहा ने 6 से 9 सितंबर, 2015 के दौरान थाईलैंड का दौरा किया। भारत - थाईलैंड रक्षा वार्ता की चौथी बैठक 21 एवं 22 दिसंबर, 2015 को बैंकाक में हुई। जनवरी 2012 में रक्षा सहयोग पर एक द्विपक्षीय एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया गया। वर्तमान रक्षा सहयोग के तहत नियमित संयुक्त अभ्यास / आतंकवाद, जल दस्युता एवं तस्करी से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा के पास संयुक्त समुद्री गश्त; एक दूसरे की संस्थाओं में अधिकारियों का प्रशिक्षण तथा सैन्य अभ्यासों में प्रेक्षक के रूप में भागीदारी शामिल है।

आर्थिक एवं वाणिज्यिक साझेदारी

द्विपक्षीय व्यापार : पिछले कुछ वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार में तेजी से वृद्धि हुई है, जो वर्ष 2013 - 14 में 9 मिलियन अमरीकी डालर के आंकड़े को पार कर गया। भारत - थाईलैंड एफ टी ए पर रूपरेखा करार पर अक्टूबर 2003 में बैंकाक में हस्ताक्षर किया गया तथा इसे संशोधित करने के लिए द्वितीय प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर जनवरी 2012 में थाईलैंड के प्रधानमंत्री की नई दिल्ली यात्रा के दौरान किया गया।

(राशि बिलियन अमरीकी डालर में)

विवरण	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	अप्रैल - सितंबर 2015
थाईलैंड का निर्यात	2.70	2.93	4.27	5.38	5.46	5.36	5.86	1.89
थाईलैंड का आयात	1.94	1.74	2.27	2.96	3.73	3.70	3.48	1.53

कुल व्यापार	4.64	4.67	6.54	8.34	9.19	9.06	9.32	3.42
-------------	------	------	------	------	------	------	------	------

स्रोत : वाणिज्य विभाग, भारत सरकार

भारत में एफ डी आई तथा थाईलैंड में भारतीय निवेश : थाईलैंड में भारतीय एफ डी आई 1970 के दशक से दो बिलियन अमरीकी डालर के आसपास है। भारत से थाईलैंड में प्रमुख निवेश कृषि उत्पाद, खनिज एवं मृदु भांड, मेटल उत्पाद एवं मशीनरी, विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद, रसायन एवं कपड़ा जैसे क्षेत्रों में हैं। अप्रैल 2000 से जुलाई 2015 के दौरान थाईलैंड से भारत में एफ डी आई का वास्तविक अंतःप्रवाह को 196.40 मिलियन अमरीकी डालर के रूप में दर्ज किया गया है। थाई निवेश मुख्य रूप से अवसंरचना, रियल इस्टेट, खाद्य प्रसंस्करण, रसायन, तथा होटल एवं अतिथि सत्कार क्षेत्र में हैं।

प्रमुख भारतीय ग्रुपों अर्थात टाटा ग्रुप (आटो मोबाइल, स्टील, साफ्टवेयर), आदित्य बिड़ला ग्रुप (रसायन, कपड़ा), इंडो रामा ग्रुप (रसायन), ल्यूपिन (भेषज पदार्थ), रैनबक्शी, डाबर, भारती एयरटेल, एन आई आई टी, पुंज - लायड, किलोस्कर तथा सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम इंडियन ओवरसीज बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, एयर इंडिया, न्यू इंडिया एस्योरेंस की थाईलैंड में उपस्थिति है। कृषि प्रसंस्करण, अवसंरचना, बैंकिंग, आटोमोबाइल, इंजीनियरिंग, आवास एवं अतिथि सत्कार जैसे क्षेत्रों की अग्रणी थाई कंपनियां भारत में सक्रिय हैं तथा अपनी कारोबारी उपस्थिति में वृद्धि कर रही हैं।

भारत में सक्रिय प्रमुख थाई कंपनियां इस प्रकार हैं - सी पी अक्वाकल्चर (इंडिया) लिमिटेड, क्रुंग थाई बैंक पी सी एल, इटल थाई डवलपमेंट पी सी एल, कैरोएन पोकफांड (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, थाई समिट नील आटो प्राइवेट लिमिटेड, थाई एयरवेज इंटरनेशनल पी सी एल, और थाईलैंड की प्रीसियस शिपिंग (पी सी एल), प्रियुस्का रीयल इस्टेट, होटल के ड्यूसिट एवं आमरि ग्रुप।

कनेक्टिविटी : भारत और थाईलैंड के बीच हवाई संपर्क बढ़ रहा है तथा हर सप्ताह 150 के आसपास उड़ानें हैं जो दोनों देशों के बीच यात्री यातायात में तेजी से हो रही वृद्धि को दर्शाता है। बैंकाक हवाई मार्ग से 9 भारतीय डेस्टिनेशन से जुड़ा है। भारत और थाईलैंड भारत - म्यांमार - थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग, एशियाई राजमार्ग नेटवर्क (यू एन ई एस सी ए पी के तहत) बी टी आई एल एस (बिम्स्टेक रूपरेखा के तहत) जैसी पहलों के माध्यम से क्षेत्रीय संयोजकता में सुधार पर निकटता से सहयोग कर रहे हैं। अवसंरचना एवं संपर्क पर जे डब्ल्यू जी की दूसरी द्विपक्षीय बैठक तथा त्रिपक्षीय परिवहन सहलग्नता परियोजना पर कार्य बल की 7वीं बैठक 29 एवं 30 सितंबर, 2014 को बैंकाक में हुई। त्रिपक्षीय मोटर वाहन करार को अंतिम रूप देने के लिए भारत, म्यांमार और थाईलैंड के परिवहन सचिवों ने अप्रैल 2015 में चेन्नई में; जून 2015 में बंगलुरु में और जुलाई 2015 में बैंकाक में बैठक की। 2015 में, 1 मिलियन से अधिक भारतीय पर्यटकों ने थाईलैंड का दौरा किया तथा थाईलैंड के लगभग 1,00,000 पर्यटक भारत के दौरे पर आए (मुख्य रूप से बौद्ध धर्म स्थलों पर)।

संस्कृति : सांस्कृतिक आदान प्रदान दोनों देशों की सरकारों के बीच हस्ताक्षरित सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम (सी ई पी) की रूपरेखा के अंदर होता है। सितंबर 2009 में बैंकाक में एक भारतीय

सांस्कृतिक केन्द्र खोला गया। 2012 - 14 के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर हस्ताक्षर जनवरी 2012 में थाई प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान किया गया है। थाईलैंड के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में अनेक भारतीय अध्ययन केन्द्र काम कर रहे हैं। भारतीय फिल्म एवं खाद्य महोत्सव आदि के अलावा भारतीय सांस्कृतिक मंडलियों के नियमित दौरों का आयोजन किया जाता है। संस्कृति मंत्रालय तथा अनेक अन्य स्थानीय साझेदारों के साथ मिलकर दूतावास ने मार्च 2014 में बैंकाक में भारत महोत्सव का आयोजन किया तथा दूसरे संस्करण का आयोजन मार्च - मई में किया गया। 21 जून 2015 को चुलालोंगकोर्न विश्वविद्यालय, बैंकाक में पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह में 7400 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

शिक्षा : शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक एम ओ यू पर 2005 में हस्ताक्षर किया गया। वर्ष 2014 - 15 के दौरान भारत सरकार ने अपनी आई टी ई सी तथा आई सी सी आर प्रायोजित स्कीमों के तहत थाई छात्रों के लिए 130 छात्रवृत्तियों की पेशकश की। भारी संख्या में थाई छात्र स्व - वित्तपोषण के आधार पर भी भारत में पढ़ाई कर रहे हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय एशियाई प्रौद्योगिकी संस्थान (ए आई टी), बैंकाक के लिए प्रत्येक सेमेस्टर में 8 प्रोफेसर के सेकंडमेंट का प्रावधान करता है।

भारत सरकार ने सिल्पाकोर्न विश्वविद्यालय, बैंकाक में संस्कृत अध्ययन केन्द्र के लिए एक नए भवन के निर्माण के लिए वर्ष 2008 में 1.25 करोड़ रुपए (10 बिलियन थाई बहट) का योगदान किया तथा संस्कृत के एक प्रोफेसर को तैनात किया है। अप्रैल 1993 से बैंकाक के थम्मासट विश्वविद्यालय में एक भारत अध्ययन केन्द्र काम कर रहा है। वर्ष 2008 में बैंकाक के माहीडोल विश्वविद्यालय में भारतीय अध्ययन पर मास्टर ऑफ आर्ट्स पाठ्यक्रम आरंभ किया। 6 मार्च, 2012 को प्रिंसेज माहा चक्री सिरोंधोर्न द्वारा चुलालोंगकोर्न विश्वविद्यालय को भारत अध्ययन केन्द्र में एक चेयर का उद्घाटन किया गया। आयुष मंत्रालय तथा रंगसित विश्वविद्यालय ने 29 जून, 2015 को रंगसित विश्वविद्यालय में आयुर्वेद पर एक पीठ स्थापित करने के लिए एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए।

थाईलैंड में भारतीय समुदाय : एक अनुमान के अनुसार थाईलैंड में भारतीय मूल के लगभग 250 लाख व्यक्ति हैं। इनमें से कई वहां कई पीढ़ियों से तथा पिछली शताब्दी से रह रहे हैं। इनमें से अधिकांश के पास थाईलैंड की नागरिकता है। भारतीय समुदाय में मुख्य रूप से सिक्ख, पंजाबी, गोरखपुरी, तमिल एवं सिंधी शामिल हैं। थाईलैंड से भारतीय मूल के दो व्यक्तियों को 2006 एवं 2010 में प्रवासी सम्मान से सम्मानित किया गया है।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, बैंकाक की वेबसाइट :

<http://www.indianembassy.in.th/>

भारतीय दूतावास, बैंकाक का फेसबुक पेज :

भारतीय दूतावास, बैंकाक

जनवरी, 2016